



Neutral Citation No. - 2026:AHC:48085

इलाहाबाद उच्च न्यायालय

रिट - सी संख्या - 6265/2026

राजाराम

.....याचिकाकर्ता(गण)

बनाम

उत्तर प्रदेश राज्य और 6 अन्य

.....प्रतिवादी(गण)

याचिकाकर्ता(गण) के अधिवक्ता: अर्जेन्द्र कुमार

प्रतिवादी(गण) के अधिवक्ता: सी.एस.सी.

न्यायालय संख्या - 6

माननीय न्यायमूर्ति प्रकाश पाड़िया

1. याचिकाकर्ता के विद्वान वकील की दलीलें सुनी गईं। विद्वान स्थायी वकील ने प्रतिवादी संख्या 1 से 3 की ओर से नोटिस स्वीकार किया, और श्री कृष्ण कांत सिंह, जो प्रतिवादी संख्या 4 की ओर से पेश हो रहे थे, ने भी नोटिस स्वीकार किया।
2. प्रतिवादियों के वकील ने एक प्रारंभिक आपत्ति उठाई है कि याचिकाकर्ता के खिलाफ मुकदमा दायर करने वाले शिकायतकर्ता, जिनका नाम सोवरन सिंह है, को पुनरीक्षण प्राधिकारी के समक्ष प्रतिवादियों में से एक के रूप में शामिल नहीं किया गया था। इसलिए, याचिकाकर्ता द्वारा दायर पुनरीक्षण याचिका ही सुनवाई योग्य नहीं थी और उसे खारिज किया जाना चाहिए था।

“अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”



3. इस समय, याचिकाकर्ता के वकील ने प्रार्थना की है कि वर्तमान रिट याचिका को 'आगे न बढ़ाने' के आधार पर खारिज कर दिया जाए, और उन्हें एक नई पुनरीक्षण याचिका दायर करने की स्वतंत्रता दी जाए।
4. तदनुसार, रिट याचिका को, की गई प्रार्थना के अनुरूप, 'आगे न बढ़ाने' के आधार पर खारिज किया जाता है।
5. कार्यालय को निर्देश दिया जाता है कि वह उस आदेश की प्रमाणित प्रति, जिसे इस रिट याचिका में चुनौती दी गई है, की एक फोटोकॉपी अपने पास रखने के बाद, उसे याचिकाकर्ता के वकील को लौटा दे।
6. यह स्पष्ट किया जाता है कि न्यायालय ने इस मामले का निर्णय इसके गुण-दोष के आधार पर नहीं किया है; अतः पुनरीक्षण प्राधिकारी, यदि याचिकाकर्ता द्वारा कानून के अनुसार कोई पुनरीक्षण याचिका दायर की जाती है, तो उस पर आगे बढ़ने के लिए स्वतंत्र है।

(न्यायमूर्ति प्रकाश पाड़िया)

10 मार्च, 2026

“अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”